

दलित साहित्य में दलित चिन्तन का उभरता स्वर

शिल्पा भाटिया

शोधार्थी, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

डॉ. मलकीयत सिंह

सह-आचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

शोध-सार :- साहित्य मानवीय चित्तवृत्तियों, सरोकारों और मनोभावों को मूर्त रूप प्रदान करता है। साहित्य तब भी था जब लिखित भाषा का विकास नहीं हुआ था। मानव ने मौखिक परम्परा से ही अपनी अनुभूतियों को विविध माध्यमों से वाणी प्रदान की। आज लिपि के विकास के कारण विश्व की प्रत्येक भाषा में साहित्य रचना हो रही है। जिससे विभिन्न मानवीय सरोकारों के प्रति चिन्तन हो रहा है। आज साहित्य मात्र क्षणिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति मात्र नहीं रहा अपितु इसमें विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर भी सार्थक पहल हुई है जिसमें हाशिये पर जीवन व्यतीत कर रहे दलित वर्ग एवं स्त्री विमर्श प्रमुख है। वर्षों से समाज में एक ऐसा वर्ग है, जो सदियों से लगातार शोषण और अपमान का शिकार हो रहा है। इस शोषित, अपमानित और घृणित वर्ग को दलित नाम दिया। आज के समय में दलित विमर्श अत्यंत सक्रिय विषय बना है। समाज और साहित्य में इस विमर्श को एक अलग पहचान मिली है। इसके लिए कई संगठन बन चुके हैं, जो आंदोलनों का रूप ले रहे हैं। सम्भवतः जिसका असर समाज, साहित्य और राजनीति पर भी पड़ रहा है। दलित विमर्श की आवश्यकता क्यों रही होगी, क्यों इतने विमर्शों में दलित विमर्श साहित्य के रूप में उभर कर सामने आया? इन सभी प्रश्नों का हल करने का प्रयत्न किया गया है। दमन वर्ग के आधार पर ही नहीं हुआ है, बल्कि स्त्री, मजदूर, रंग आदि को भी आधार बनाकर शोषण किया गया।

बीज-शब्द:- दलित, शोषित, उत्पीड़न, वर्ण, दमन, आन्दोलन, समाज, जाति, हक, विमर्श, स्त्री, मजदूर और किसान आदि।

विषय-वस्तु:- दलित वे हैं जिनका दमन हुआ है, जो शोषित हैं या फिर जिनका लगातार उत्पीड़न किया जा रहा हो। कोई भी मनुष्य अपनी इच्छानुसार जन्म या मृत्यु को प्राप्त नहीं कर सकता। अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी व्यक्ति जन्म के लिए, परिवार, जाति, समाज और देश को नहीं चुन सकता है। व्यक्ति का जहाँ जन्म होता है। उसी परिवार और समाज की संस्कृति और व्यवहार से सीखता है, और उसका आत्मसात करता है। जिस प्रकार वर्ण व्यवस्था का सहारा लेकर कुछ लोग निम्न वर्ग के लोगों का दमन और शोषण सदियों से करते आ रहे हैं। जिस कारण आने वाली पीढ़ी अपने पूर्वजों के व्यवहार को आत्मसात करते हुए, निम्न वर्ग का शोषण करना अपना अधिकार समझते हैं। निम्न वर्ग की मानसिकता भी शोषण सहते – सहते यही हो चुकी है कि शोषित होना उनका भाग्य है। इसी पर चिंतन करते हुए बहुत से आन्दोलन हुए। जिसमें ज्योतिराव गोविंदराव फुले, डॉ अम्बेडकर, पेरियार के, राम कृष्ण पिल्लई और सी.वी.रमन पिल्लई आदि का पूर्ण रूप से सहयोग रहा। चिंतन का सम्बन्ध दृष्टि से है। किसी भी विषय को समझने का प्रयास चिंतन है। दलित साहित्य जिजीविषा और आत्मसमान का साहित्य है। दलित साहित्य में दलितों ने अपनी पीड़ा को एक वाणी का रूप देने

प्रयास किया है और अपने जीवन संघर्ष और यथार्थ को सामने लाने का प्रयास किया है। यह अन्य विषयों की तरह 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' के लिए नहीं अपितु जीवन जीने के लिए किये जाने वाले संघर्ष और आन्दोलन पर आधारित साहित्य है। दलित विमर्श के केंद्र बिन्दु में वे सभी सवाल आते हैं, जो भेदभाव से सम्बन्धित हैं चाहे भेदभाव जातिगत हो, रंग के आधार पर या फिर धर्म के आधार पर ही क्यों न हो दलित विमर्श के अंतर्गत आते हैं। ये जातिगत भेद श्रम के आधार पर ही नहीं श्रमिकों में भी भेद करते हैं।

दलित शब्द उन सभी के लिए उपयुक्त है, जिनका दमन हो रहा है। वे सभी दलित हैं, फिर वो स्त्री हो, मजदूर हो, किसी दफ्तर का कर्मचारी हो या फिर कोई पंचम वर्ण का हो। लेकिन साहित्य में बहुत से विमर्शों को मुद्दा बनाया है जिसमें दलित विमर्श भी एक है। जो किसी जाति वर्ग पर आधारित है। जाति को समाज ने कितना महत्वपूर्ण माना है, यह मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' में बताया है। "आदमी जब पैदा होता है, उसकी जाति लिखाई जाती है और मरने पर भी। यही जाति पहले सरकारी रजिस्टर में ही होती है या लोगों के दिलों में। "यह पंक्तियाँ हमें समाज की मानसिकता को दर्शाती हैं कि जाति के आधार पर ही समाज में किसी व्यक्ति के लिए सम्मान होता है। व्यक्ति का चरित्र और गुण महत्व नहीं रखते, बल्कि जाति सर्वोपरि है। इसी जातिवाद की भावना को आधार बनाकर जो अन्याय और शोषण समाज में हो रहा है। उसके विरोध में साहित्य तथा आंदोलनों का सहारा लिया गया। डॉ अम्बेडकर ने दलितों के आत्मसमान और उनके हक को दिलाने के लिए अनेक प्रयास किये। लेकिन उनका मानना था, कि जब तक खुद लोगों को एहसास नहीं होगा कि उनके साथ गलत हो रहा है और उनके अन्दर आत्मसमान की भावना जागृत नहीं होगी। तब तक उनके द्वारा किये गये प्रयासों का कोई अर्थ नहीं है। डॉ बी.आर.अम्बेडकर का मानना था कि शोषण को खत्म करने के लिए सबसे बड़ा हथियार शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा ही अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता लाई जा सकती है और साथ ही अपने विरुद्ध हो रहे अन्याय पर आवाज उठा सकते हैं।

निम्न वर्ग के लोग अस्पृश्यता और लगातार शोषित होने के कारण समाज के सामने अपनी जाति का सच छुपाता है। एक बेटा अपने दोस्तों के सामने अपने पिता से नजरे नहीं मिलाता। क्योंकि उसको लगता है कि पिता को सर पर बोझा ढोते देख या मजदूरी करते देख, उसकी जाति का सच सामने आ जाएगा, जिससे समाज और मित्रों की दृष्टि में घृणा का पात्र बनेगा।

ओमप्रकाश वाल्मीकि कि जूठन खंड दो में इसी मानसिकता को दिखाया है, कि किस प्रकार कंपनी में लोगों से जाति छुपा के कार्य किया जा रहा है। अपने समाज को भी छोड़ दिया गया है ताकि दफ्तर और समाज में उनकी प्रतिष्ठा बनी रहे। "यदि मेरे से बात करने से

आपकी प्रतिष्ठा पर आंच आती है तो कृपया आगे से हम नहीं मिलेंगे लेकिन साथ ही वाल्मीकि जी ने निम्न वर्ग को उनकी शक्ति का एहसास भी करवाया है, "जाति को लेकर समाज में जो स्थिति है, मैं उससे इनकार नहीं कर रहा हूँ। जितना डरोगे लोग उतना तुम्हें डराएँगे। एक बार मन से डर निकाल दो, फिर देखो तुमसे डरने लगेंगे।"²

यह समाज का कड़वा सच है। जहाँ किसी की कमजोरी देखेंगे, उसकी कमजोरी का फायदा उठा कर शोषण करना शुरू कर देते हैं। और जहाँ हम अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाना शुरू करते हैं हमारी शक्ति का एहसास शाषित वर्ग को भी हो जाता है। समाज में जितना अपराधी शाषित वर्ग है उतना ही अपराध का हिस्सेदार शाषित वर्ग भी है। क्योंकि वो अपने विरुद्ध हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाता। हमने खुद शाषित वर्ग को हक दिया शाषण करने का अपना आत्मसमान खुद उनके सामने गिरवी रख दिया। उच्च वर्ग का छोटा बच्चा हो या कोई बुजुर्ग, निम्न वर्ग के लोग उनके सामने सर झुकाते हैं। इस गुलामी का चित्रण हम सुखवीर सिंह द्वारा रचित कविता बयान बाहर कविता के माध्यम से समझ सकते हैं -

जब कोई दो कोड़ी /दस बीघे या चार हवेली
का मालिक रास्ते से गुजरे
तो खुदबखुद फुर्ती से/ किनारे हट कर
बाअदब बामुलाहिजा होशियार के लहजे में
सलाम बजानी है।

खुद चाहे कीचड़ में/ कांटो में/ खड़े रहें एक पाँव
पर अलग हटकर
जाति कि श्रेष्ठता में अकड़े हुए

नीच से नीच व्यक्ति के लिए भी राह बनानी है।³

उच्च वर्ग का चपरासी भी निम्न वर्ग के उच्च अधिकारी को खुद से तृच्छ समझता है। व्यक्ति और समाज का मूल्यांकन जातिगत आधार पर किया जाता है, ना कि उसके गुणों के आधार पर। देखा जाए तो मूल वैदिक काल में आर्य, ब्राह्मण और वैश्यों का वर्गीकरण नहीं हुआ है। "ऋग्वेद काल में शूद्र तिरस्कृत नहीं थे। वास्तव में ऋग्वेद में तीन ही वर्ण थे ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्या।"⁴ उपनिषद काल में धीरे-धीरे चौथे वर्ण की तथा बाद के काल खंडों में अछूत वर्ग की निर्मिति की गयी है। हिन्दू धर्म के अनुसार वेदों में वर्णों की उत्पत्ति की बात की गई है। माना जाता है कि ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जाँघों से वैश्य और पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए। पैरों से उत्पन्न होने के कारण शूद्रों को सबसे निचले स्तर पर माना जाता है, और उपर के सभी वर्णों की सेवा करना शूद्रों का धर्म माना गया। साथ ही इन्हें घृणित भी माना गया, लेकिन हिन्दू धर्म कि व्यवस्थाओं का अनुसरण किया जाए तो किसी भी पूजनीय देवता और पुरुष के सम्मान के लिए उसके पाँव में नतमस्तक होते हैं। तो फिर उन्ही पाँव से उत्पन्न शूद्र अस्पृश्य कैसे हो सकते हैं? "सनातन धर्म कि चिन्ता में मूलतः मानव है। और वह जिस भी स्थिति में है, और जैसा भी काम करता है, वहीं पर अपना आत्मिक विकास करता करे, इसकी व्यवस्था करता है। जो धर्म 'कर्मेषु कोशलं योगा : 'कहता हो। फिर कर्म के आधार पर वह किसी प्रकार की उंच- नीच व्यवस्था नहीं दे सकता।"⁵ वैसे तो 'मनुस्मृति' को भी वर्ण व्यवस्था का आधार माना जाता है। लेकिन वास्तव में मनु ने तो जो समाज में परिचलित था, उसी को लिखित रूप में सामने रखा। महात्मा बुद्ध ने वर्ण व्यवस्था का विरोध किया, और इनका जन्म ईसा पू. 500 से 600 माना जाता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि लगभग 3000 वर्षों से पूर्व दलितों का शोषण होता आ रहा है। और जातिवाद की हद तो तब होती है, जहाँ जातियों में भी उप जाति है। जो लगातार शोषित होते हैं। शोषण जाति वर्ग के आधार पर ही

नहीं होता है, वल्कि किसानों का पूरा मेहनताना नहीं देना, दफतरो में अपने से छोटे पद पर आसीन अधिकारियों का शोषण, महिलाओं का शोषण और महिलाओं को तो दोहरा शोषण सहना पड़ता है। जिसमे मानसिक, शारीरिक, घरेलू शोषण, कार्यालयों में और साथ ही निम्न वर्ग के होने पर भी शोषण सहन करना पड़ता है। स्त्रियों के शोषण के सम्बंध में मोहनदास नैमिशराय ने 'अपने - अपने पिंजरे' में बताया कि किस प्रकार नूर मोहम्मद एक कसाई है, जिसकी नजर में औरत क्या है "जानवर और औरत में कोई फर्क न था। एक को काटते थे दूसरे को पीटते थे।"⁶ औरत समाज में हमेशा शोषित होती आई है, चाहे किसी भी वर्ग की क्यों ना हो। ये बात अलग है कि उनके दमन/ शोषण का तरीका अलग - अलग हो सकता है। उच्च वर्ग का शोषण चारदीवारी के भीतर होता है और निम्न वर्ग की स्त्री का समाज के सामने कभी मजदूरी करते तो कभी मैला उठाते हुए और कभी अपने परिवार के द्वारा तो कभी उच्च वर्ग के द्वारा। रजनी तिलक अपनी कविता में लिखते हैं-

"एक सताई जाती है स्त्री होने के कारण,
दूसरी सताई जाती है स्त्री और दलित होने पर
एक तडपती है सम्मान के लिए,
दूसरी तिरस्कृत है भूख और अपमान से।"⁷

आजादी के 78 सालों में बहुत कुछ बदल गया है। स्त्री की स्थिति में भी काफी बदलाव आया है, लेकिन आज भी समाज की मानसिकता औरत को गुलाम बना कर रखना है। दफतर जायेगी तो सहकर्मियों कि नजरों में खटकती है, घर पर नौकरी के नाम पर आजादी तो है। लेकिन जाने से पहले घर के सारे काम करने के बाद दफतर जायेगी और घर आ कर सारा काम करेगी। आज भी लड़की अपने घर और बाहर सुरक्षित महसूस नहीं करती, रात तो की वो दिन म भी अकेले कहीं जाने में सुरक्षित नहीं है। औरत की असली आजादी तब मानी जायेगी जब उसको रात में घर से अकेले निकलते समय ये न सोचना पड़े कि वो किसी की गंदी नजरों का शिकार ना हो जाए। स्त्री की आजादी का अर्थ असल मायनों में तब है, जब समाज स्त्री को उसके शरीर नहीं अपितु उसकी प्रतिभा और श्रम का मूल्य देना सीखेगा। जब स्त्री को स्त्री या खिलौना न समझ कर उसको मनुष्य के रूप में स्वीकृत करेगा। शोषण अभी भी होता है, लेकिन शोषण का तरीका बदल चुका है। आज निम्न वर्ग के लोग जागरूक हो गये हैं शिक्षा ग्रहण करके उच्च पदों पर आसीन हैं। लेकिन उच्च वर्ग की मानसिकता वही है। इस पर दयानंद बटोही लिखते हैं- "अब दान में अंगूठा मांगने का साहस कोई नहीं करता/ प्रेक्टिकल में फ़ैल करता है।"⁸

डॉ आम्बेडकर जी हमेशा से निम्न वर्ग पर हो रहे अन्यायों के विरुद्ध थे, वे हमेशा से उनको समानता, आत्मसमान तथा उनका हक उन्हें दिलाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने पढ़े लिखे दलित समुदाय के लोगों को दलितों पर हो रहे अन्याय और हक के लिए लिखने को प्रेरित किया। जिसके परिणामस्वरूप बहुत से दलित आन्दोलन भी हुए। वे चाहते थे कि इन लोगों पर हो रहे अन्याय का एहसास इनको हो जिससे कि अपने हक के लिए और अपने विरुद्ध हो रहे अन्याय पर आवाज उठाना सीखे। "कोई भी वर्ग कितना भी कमजोर क्यों न हो अगर उसे अन्याय कि सुरंग से गुजरना पड़ता है तो अन्याय और उत्पीड़न की वेदना या पीड़ा पीढ़ी दर पीढ़ी हजारों साल तक स्थान्तरित होती रहती है। उनके अपने मिथ बन जाते हैं भले ही शासक वर्ग उनका नोटिस न ले। परन्तु कभी न कभी वह बिन्दु आता है। जब वह उत्पीड़न विस्फोट में बदलकर लावे की शकल ले लेता है।"⁹ शाषित वर्ग को भी समझना होगा साथ चलकर तथा एक दूसरे का सम्मान करके ही जीवन को सहज और विकास के पथ पर ले जाया जा सकता है।

अगर निम्न वर्ग काम करना छोड़ दे तो समाज और देश अस्त – व्यस्त हो जाएगा I हर किसी का कार्य सम्माननीय है, एक – दूसरे के कर्म के बिना समाज अपूर्ण है I जिस प्रकार एक तरफ से सेकी गयी रोटी खाने योग्य नहीं होती I ठीक उसी तरह से समाज किसी एक वर्ग के सहारे उन्नत नहीं हो सकता, समाज के सभी वर्गों को साथ मिलाकर चलने से ही एक विकसित समाज को बनाया जा सकता है I हम ओम प्रकाश वाल्मीकि की कविता 'ठाकुर का कुआँ' की पंक्तियों से समझ सकते हैं कि दलित समाज किस तरह मेहनत करने के बाद भी अपना हक नहीं पाता I

**“बैल ठाकुर का
हल ठाकुर का
हल कि मूठ पर हथेली अपनी
फसल ठाकुर की। ”¹⁰**

आज भी किसानों कि स्थिति यही है I किसान खेतों में मेहनत करता है, बीज और खाद के लिए ऋण तक लेता है I साथ ही इतने समय तक उस फसल कि देखभाल करता है I उसके बाद या तो उसको मौसम से हारना पड़ता है या फिर साहूकारों से जो उनकी फसल का मूल्य बहुत कम देते हैं I जिस कर्ण ऋण की रकम भी किसान वापिस नहीं कर पाता और आत्महत्या तक कर लेते हैं, ये भी शोषण का रूप है I आज भी मजदूरों के साथ शोषण होता है, जिस वस्तु का मूल्य बाजार में 500 रुपये है, उसी वस्तु को बनाने वाले मजदूर को उसका मूल्य 50 रुपये या इससे भी कम दिया जाता है I

निष्कर्ष:- भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था का बीज बहुत पुराना है I जाति के आधार पर अस्पृश्यता, शोषण और ऊँच – नीच का जहर समाज में बहुत गहराई तक घुल चुका है I जिसको खत्म करने में समय तो लगेगा, क्योंकि जातिवाद का अहंकार उच्च वर्ण में इस तरह समा चुका है जिस प्रकार शरीर में आत्मा I ज़ाहिर सी बात है अगर कोई सदियों से सबसे ऊँचे पायदान पर रहकर शासन कर रहा हो और अचानक उसके शासन के अधिकार ले लिए जाये तो यह उसके लिए असहनीय होगा I लेकिन अब समय बदल चुका है, शिक्षा के माध्यम से निम्न वर्ग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो चुका है I समाज और राष्ट्र का विकास तभी सम्भव हो सकता है जब सभी वर्ग मिलजुल कर कार्य करे और सभी को सम्मान और उनके हक प्राप्त हों I अब शाषित वर्ग को भी समझना होगा अगर सफाई बाला अपना कार्य छोड़ दे, किसान फसल उगाना, मजदूर मजदूरी करना और मैला ढोने वाले अपना कार्य छोड़ दें I तो समाज की स्थिति क्या होगी ? क्या उच्च वर्ग निम्न वर्ग के बिना अपने जीवन कि कल्पना कर सकता है ? इसलिए हर किसी के कार्य का सम्मान करना चाहिए I किसी के अधिकारों का हनन नहीं करना चाहिए, प्रत्येक मनुष्य को समान दृष्टि से देखना चाहिए

संदर्भ सूची:-

1. ओम प्रकाश वाल्मीकि, 'जूठन दूसरा खंड' राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ -19
2. वही पृष्ठ
3. (सम्पादक) डॉ एन.सिंह, 'दर्द के दस्तावेज' आनन्द साहित्य सदन, अलीगढ़, प्रथम संस्करण 1992 पृष्ठ -40
4. रामधारी सिंह दिनकर, 'संस्कृति के चार अध्याय' लोकभारती प्रकाशन 2011, पृष्ठ-52
5. डॉ एन.सिंह, 'दलित चिंतन अनुभव और विचार' वाणी प्रकाशन 2015, पृष्ठ-15
6. मोहनदास नैमिशराय, 'अपने-अपने पिंजरे (भाग-1)' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -21
7. रजनी तिलक, 'दलित निर्वाचित कविताएँ' इतिहासबोध प्रकाशन, संस्करण 2006, पृष्ठ-144
8. डॉ. एन.सिंह, 'दर्द के दस्तावेज' आनन्द साहित्य सदन अलीगढ़, प्रथम संस्करण 1992, पृष्ठ-111
9. गिरिराज किशोर, 'दलित विमर्श :सन्दर्भ गांधी' प्रथम संस्करण 2003, पृष्ठ-18
10. सर्वेश कुमार मोर्य, 'यथार्थवाद और हिंदी दलित साहित्य' स्वराज प्रकाशन 2012, पृष्ठ 162